UNIT- 1

Ques 1. वृद्धि और विकास से क्या अभिप्राय है, वृद्धि और विकास का अध्यापक के लिए क्यों आवश्यक है?

Ans: Introduction -

> बाल विकास का अर्थ :-
गर्भ अवस्था से लेकर प्रौढ अवस्था तक के होने वाले परिवर्तन को बाल विकास को बाल विकास कहते हैं। इस प्रकार से विकास की गर्भ अवस्था, शैश अवस्था, बाल्य अवस्था, किशोर एवं प्रौढ अवस्था को कई अवस्थाओं से गुजरते हुए परिपक्व तक पहुँचाती हैं। विकास एक परिवर्तन प्रक्रिया है, वृद्धि एक समय के बाद रूक जाती है।

> वृद्धि का अर्थ :- शारीरिक वृद्धि जैसे-२ बच्चे बडे होते जाते हैं, उनके शरीर के अंग बढ़ते जाते हैं। मानव के शरीर के विभिन्न अंगों के विकास तथा उन अंगो के कार्य करने की क्षमता को विकास माना जाता है और व्यक्ति के अंगों में परिवर्तन होना शुरू हो जाता है। वृद्धि से अभिप्राय है शरीर के आकार, भार में वृद्धि।

Definitions :-

1) हरबर्ट सोरेन्सन के अनुसार शारीरिक वृद्धि को बड़ा और भारी होना बताया है, जो वृद्धि और परिवर्तनों की और संकेत करते हैं।

2) फ्रैंक के अनुसार शरीर के किसी विशेष पक्ष में जो परिवर्तन आता है, उसे वृद्धि कहते हैं।

3) इंगलिश तथा इंगलिश के अनुसार "विकास शरीर व्यवस्था में एक लम्बे समय में होने वाले सतत् परिवर्तन का एक अनुक्रम है। विशेषतया मानव में इस प्रकार के परिवर्तन अथवा सम्बन्धित और स्थायी विशेष परिवर्तन उनके जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त होते रहते है"

> विकास का अर्थ :-

Scanned with CamScanner

APCO
Date
Page 02

विकास शब्द का अर्थ उन जटिल प्रक्रियों का समूह है जिनमें निषेचित अंडे से एक परिपक्व व्यक्ति का उदय होता है। मानव के आकार को उसकी रचना में गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तनों के कारण उसमें कार्य सम्बंधी सुधार आ जाते हैं। विकास परिपक्व की एक प्रक्रिया है। शारीरिक विकास शारीरिक वृद्धि पर निर्भर करता है।

Definition :-

1) हरलॉक के अनुसार विकास परतों में विधि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह परिपक्वता के लक्ष्यों की ओर परिवर्तनों की एक प्रगतिशील शृंखला है।

> वृद्धि तथा विकास में अंतर :-

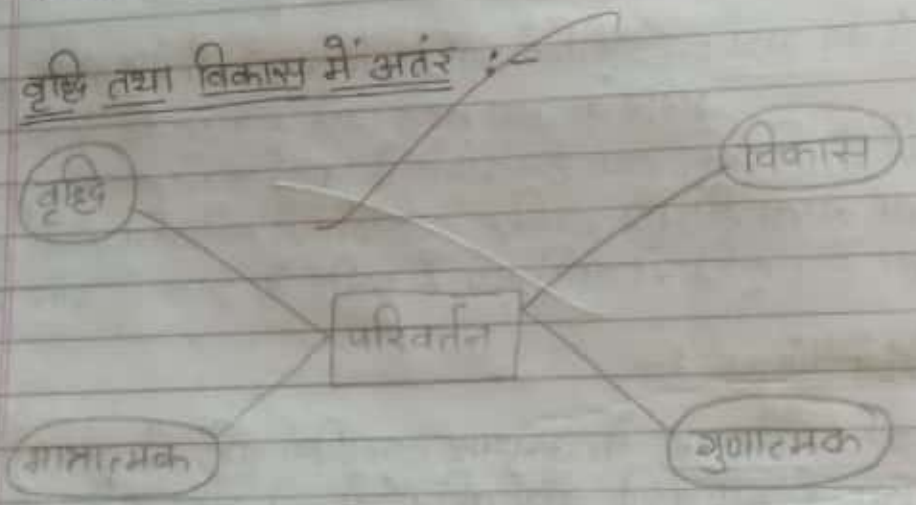

>1) अर्थ में अंतर :-

वृद्धि का अर्थ है, शारीरिक परिवर्तन। इन शारीरिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप हि व्यवहारों में परिवर्तन आना आरंभ हो जाता है। लेकिन विकास का प्रयोग शरीर के विभिन्न अंगों के विभिन्न दिशाओं में गुणात्मक उन्नति के कारण

Scanned with CamScanner

किया जाता है।

> 2) निरंतरता :-
वृद्धि लगातार नहीं होती, न ही जन्म से मृत्यु तक चलती है। एक विशेष आयु सीमा के पश्चात् वृद्धि रूक जाती है। विकास की प्रक्रिया जन्म से मृत्यु तक चलती है। मनुष्य में गुणात्मक परिवर्तन होता रहता है।

> 3) वृद्धि और विकास में सम्बन्ध :-
वृद्धि और विकास को एक-दूसरे का पर्यायवाची समझा जाता है। बढ़ते हुए शरीर के साथ उसकी कार्य क्षमता भी बढ़ती है। विकास की प्रक्रिया वृद्धि के बिना हो सकती है। विकास के अन्य पक्षों में बौद्धि पक्ष, सामाजिक पक्ष, हावी हो जाते हैं। इस प्रकार जब वृद्धि पक्ष रूक जाता है, तब विकास का पक्ष निरंतर चलता रहता है।

> 4) विस्तृत और संकीर्ण :-
वृद्धि शब्द संकीर्ण माना गया है। जबकि विकास एक व्यापक शब्द है। विकास शब्द में वृद्धि शब्द में शामिल किया जाता है। विकास के विभिन्न तत्वों में एक वृद्धि भी है।

> 5) परिमाणात्मक और गुणात्मक :-
वृद्धि परिमाणात्मक परिवर्तनों से जुड़ी हुई है। जबकि विकास का सम्बन्ध गुणात्मक से है। गुणात्मक व मात्रात्मक दोनों परिवर्तनों से जुड़ी हुई है।

> 6) वृद्धि और विकास की मापना :-
वृद्धि का सम्बन्ध आकार, भार, ऊँचाई आदि के परिवर्तनों से होता है। जो भी परिवर्तन होते हैं, उनको हम माप सकते हैं। जो परिवर्तन हम आँखों से देख सकते हैं, उनको भी माप जाता है। विकास की प्रक्रिया में परिवर्तनों की मापना कठिन होता है, इनमें परिवर्तनों को महसूस किया जाता है।

Scanned with CamScanner

② > <u>विकास के सिद्धांत</u> :-

विकास की प्रक्रिया बहुत ही विस्तृत और जटिल होने के कारण तथा इसके निरंतरता के कारण इसके कुछ सिद्धांतों का अनुकरण करना पड़ता है।

विकास

1) निरंतरता का सिद्धांत
2) एकरूपता का सिद्धांत
3) वैयक्तिक भिन्नताओं का सिद्धांत
4) वंशानुक्रम और वातावरण के संयुक्त परिणाम का सिद्धांत
5) समग्र का सिद्धांत
6) परिपक्वता और अधिगम का सिद्धांत
7) विकास कि दिशा का सिद्धांत
8) स्वरूप के पश्चात क्रियाएँ
9) वृद्धि और विकास की गति के दर में विभिन्नता का विकास
10) विकास कि भविष्यवाणी का सिद्धांत
11) सामान्य से विशिष्ट की ओर विकास का सिद्धांत
12) एकीकरण का सिद्धांत
13) विकास की संचीता और पुनरावृत्ति का सिद्धांत
14) मूर्त से अमूर्त की ओर सोचने का सिद्धांत
15) विकास में विभेदीकरण तथा एकीकरण की क्रिया होती है।

>1) <u>निरंतरता का सिद्धांत</u> :-

विकास की प्रक्रिया बहुत विस्तृत है। यह प्रक्रिया जन्म से मृत्यु तक चलती रहती है। यह धीरे-2 वह निरंतरता से चलता है। इस प्रक्रिया में विकास नहीं होती इसमें उतार चढ़ाव आते रहते हैं। निरंतरता की गति एक समान परिवर्तन अचानक नहीं होता धीरे-2 होता है। व्यक्ति के अंदर को भी

2) एकरूपता का सिद्धांत :-

विकास की प्रक्रिया में एक-रूपता दिखाई देती है। चाहें व्यक्तिगत विभिन्नताएं कितनी भी हैं। Ex- बच्चों में भाषा का विकास एक निश्चित क्रम से होता है। चाहें तो बच्चे किसी भी देश का हो। बच्चों में शारीरिक विकास भी एक निश्चित क्रम से ही होती है। बच्चों का विकास सिर से शुरू होता है। बच्चों के विकास की गति में तो अंतर होता है। लेकिन क्रम में एकरूपता होती है।

3) वैयक्तिक भिन्नताओं का सिद्धांत :-

मनोवैज्ञानिकों ने वैयक्तिक भिन्नताओं को बहुत महत्व दिया है। विकास की प्रक्रिया को विभिन्न आयु-वर्गों में बाँटा गया है। हर आयु वर्ग की विशेषताएँ अलग-2 होती हैं। Ex- जैसे जुड़वा बच्चों में वैयक्तिक भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। सभी व्यक्तियों में वृद्धि और विकास उनकी अपनी स्वाभाविक गति से होता है। कुछ व्यक्तियों में विशेषता से व्यवहार शीघ्र विकसित हो जाती और कुछ व्यक्तियों में देर से विकसित होती हैं। व्यक्तियों में अनेक भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। सभी व्यक्तियों में वृद्धि और विकास ~~उनकी अपनी स्वाभाविक गति से होती हैं~~ समानता नहीं रहता है।

4) वंशानुक्रम और वातावरण के संयुक्त परिणाम का सिद्धांत :-

बच्चों की वृद्धि और विकास वंशानुक्रम और वातावरण का संयुक्त परिणाम हैं। विभिन्न अध्ययनों ने यह लिख दिया है कि बालक के वृद्धि और विकास के वंशानुक्रम और वातावरण का अनेक प्रभाव पड़ता है। वंशानुक्रम को बच्चों को व्यक्ति की नींव माना जाता है।

5) समग्र का सिद्धांत :-

मनुष्य के शरीर का विकास समग्र रूप से ही होता है। मनुष्य के विभिन्न पक्षों का विकास साथ-2 चलता रहता है। जैसे- सामाजिक, मानसिक, शारीरिक, संवेदात्मक विकास। ये सभी एक दूसरे से सम्बन्धित होते हैं।

Scanned with CamScanner

> 6) परिपक्वता और अधिगम का सिद्धांत :-

वृद्धि और विकास की प्रक्रिया में परिपक्वता और अधिगम का महत्व स्थान है। परिपक्वता से वृद्धि और विकास तथा सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। बच्चों में परिपक्वता के स्तर में काफी विभिन्नताएँ होती हैं। यही विभिन्नता उसकी अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती है। Ex- यदि कोई बालक किसी कार्य को सीखने के लिए अभिप्रेरित है, लेकिन उस कार्य करने के लिए उसका भौतिक विकास नही है, तो वह बालक उस कार्य करने के लिए उसका में असमर्थ रहेगा।

> 7) विकास की दिशा का सिद्धांत :-

वृद्धि और विकास की अपनी ही दिशा निश्चित होती है। मानव के बच्चों का सबसे पहले सिर और बाद में पाँवों का विकास होता है।

i) सिर से पाँव की ओर बढ़ता है और विकसित होता है न कि पाँव से सिर की ओर।

ii) रीढ़ की हड्डी से बाहर की ओर विकास का कर्म रीढ़ की हड्डी से शुरू होता है। फिर बाहरी विकास होना शुरू हो जाता है। जैसे अवस्था में सिर का विकास होता है। उसके बाद शरीर के निचले हिस्से का विकास होता है।

iii) स्वरूप के पश्चात् क्रियाएँ शरीर के विभिन्न भाग विकसित होते हैं, इसके पश्चात प्रयोग किया जाता है। लेकिन इनका किसी विशिष्ट कार्य के लिए प्रयोग करने से पहले इनकी मासपेशियों का विकास होना चाहिए।

> 8) वृद्धि और विकास की गति के दर में विभिन्नता का विकास :-

व्यक्ति की वृद्धि और विकास की विभिन्न अवस्थाएँ होती हैं। इनकी अवस्थाओं के अनुसार वृद्धि और विकास कि गति में भी विभिन्नताएँ होती हैं। इनकी अवस्थाओं के कारण विकास की गति दर एक समान नहीं होता। प्रारंभिक अवस्थाओं में यह गति तेज होती है। बाद में धीमी हो जाती है। एक ऐसी अवस्था

तक पहुँच जाते हैं। जिसमें वृद्धि रुक जाती है लेकिन विकास चलता रहता है।

>9) विकास की भविष्यवाणी का सिद्धांत :-

विकास की भविष्यवाणी करना है। जैसे बालक के समान रुचियां, वृद्धि और अभिरुचि आदि।

>10) सामान्य से विशिष्ट की ओर विकास का सिद्धांत :-

विकास की भविष्यवाणी करना इस सिद्धांत के अनुसार बालक सामान्य व्यवहार करना सीखता है। बाद में वह धीरे-2 विशिष्ट व्यवहार की ओर बढ़ता है। जैसे बालक किसी वस्तु को देखकर पकड़ने का प्रयास करता है और इधर-उधर हाथ मारता है, लेकिन समय के अनुसार बालक विशिष्टता की ओर बढ़ता है और उसी वस्तु की ओर हाथ बढ़ाता है, जो उसे चाहिए।

>11) एकीकरण का सिद्धांत :-

इस सिद्धांत के अनुसार पहले बच्चा सम्पूर्ण अंग की और तथा फिर विशिष्ट भागों का प्रयोग करना सीखता है। जैसे बच्चे पूरे हाथ को हिलाता है। फिर धीरे-2 उंगलियों को हिलाने का प्रयास करता है।

>12) विकास की संचिती और पुनरावृत्ति का सिद्धान्त :-

विकास अनुभवों का कुल योग होता है, न कि केवल किसी एक ही अनुभव पर आधारित। विकास मे पुनरावृत्ति -वाला इसलिए होता है, क्योंकि विकास की प्रत्येक अवस्था की विशेषताओं की आवृत्ति दूसरी अवस्था में भी देखा जा सकती है।

>13) मूर्त से अमूर्त की ओर सोचने का सिद्धांत :-

मानसिक विकास भौतिक रूप से उपस्थित वस्तुओं के बारे में चिन्तन करने की योग्यता से

Scanned with CamScanner

APCO
Date
Page 08

उन वस्तुओं को देखने के सिद्धान्त का अनुकरण करता है, जो अमूर्त रूप से होती हैं।

>14) बाहरी नियंत्रण से आन्तरिक नियंत्रण का सिद्धान्त :-

छोटे बच्चे मूल्यों और सिद्धान्तों के लिए दूसरों पर निर्भर करते हैं, जैसे ही वे बड़े होते हैं, उनकी स्वयं की मूल्य प्रणाली, स्वयं की आत्मा तथा उनका स्वयं का आन्तरिक नियंत्रण का समूह या सैट विकसित हो जाता है।

>15) विकास में विभेदीकरण तथा एकीकरण की प्रक्रिया होती है :-

शिशु के रूप में व्यक्ति की क्रियाएं बौस अर्थात् एकीकृत होती हैं। इन क्रियाओं में सामान्य, विशिष्ट एवं समन्वित प्रतिमान उत्पन्न होते हैं। विशिष्ट प्रतिमान नए और जटिल व्यवहार को सीखने के लिए पुनः एकीकृत होते हैं। विकास के दो सामान्य नियम होते हैं - प्रथम, विभेदीकरण तथा द्वितीय, श्रेणीबद्ध एकीकरण। शिशु शीघ्र क्रियात्मक समन्वय की अभिव्यक्ति करना शुरू कर देते हैं। पहले वे भुजाओं की क्रियाओं पर नियन्त्रण दिखाते हैं, फिर हाथ की क्रियाओं तथा अन्त में अंगुलियों की क्रियाओं का पूर्ण नियन्त्रण दिखाते हैं।

> विकास की अवस्थाएँ :-

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने विकास की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का वर्णन किया गया है। भिन्न-2 आयु में बच्चों का विकास किस प्रकार होता है। विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेष व्यवहार से होती है। इन विभिन्न आवश्यकताओं के बीच कोई ऐसी निश्चित रेखा नहीं है जो इनको एक-दूसरे से अलग कर सकती है। विकासात्मक आवश्यकताओं की शुरूआत गर्भ धारण के समय शुरू होती है। जब तक व्यक्ति परिपक्वता को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक चलती रहती हैं। विकास की अवस्था कभी मंद या तीव्र हो जाती हैं।

Scanned with CamScanner

i) रॉस ने विकास की प्रमुख रूप से चार निम्नलिखित अवस्थाएँ बतलायी हैं-

a) शैशवावस्था - 1 से 3 वर्ष तक
b) प्रारंभिक बाल्यावस्था - 3 से 6 वर्ष तक
c) उत्तर बाल्यावस्था - 6 से 12 वर्ष तक
d) किशोरावस्था - 12 से 18 वर्ष तक

ii) शैले ने विकास की प्रक्रिया को निम्नलिखित अवस्थाओं में बांटा है-

a) शैशवावस्था - जन्म से लेकर 5 वर्ष तक
b) बाल्यावस्था - 6 से लेकर 12 वर्ष तक
c) किशोरावस्था - 12 से लेकर 18 वर्ष तक

iii) कालसनिक ने विकास की प्रक्रिया का निम्नलिखित अवस्थाओं में बांटा है-

a) गर्भाधान से लेकर जन्म समय तक - पूर्व जन्म काल।
b) नवशैशव - जन्म से लेकर 3 या 4 सप्ताह तक।
c) आरंभिक शैशव - 1 से लेकर 15 महीने तक।
d) अंतर शैशव - 15 से लेकर 30 महीने तक।
e) पूर्व बाल्यावस्था - 2 से लेकर 5 वर्ष तक।
f) मध्य बाल्यावस्था - 6 से लेकर 12 वर्ष तक।
g) किशोरावस्था - 12 से लेकर 21 वर्ष तक।

iv) ई. बी. हरलॉक रूच ने जन्म से पूर्व की अवस्था में निम्नलिखित विकासों के क्रम की चर्चा की है-

a) भ्रूणिक काल - इसका समय 0 से 2 सप्ताह तक होता है। इस काल में निषेचित अंड कोष - विभाजन द्वारा विकसित होता है।
b) भ्रूणीय अवस्था - 2 से 10 सप्ताह तक वह अवस्था होती है। इस अवस्था में शरीर के विभिन्न अंग अपना स्वरूप लेना करना शुरू कर देते हैं।
c) भ्रूण अवस्था - 10 सप्ताह से जन्म तक का समय इस अवस्था के

Scanned with CamScanner

अन्तर्गत आता है।

V) हर्लॉक ने विकास की अवस्थाएँ निम्न प्रकार से दी हैं-
a) जन्म - पूर्व की अवस्था - गर्भाधान से जन्म तक का समय अर्थात् 280 दिन।
b) शैशवावस्था - जन्म से लेकर 2 सप्ताह
c) शिशुकाल - 2 वर्ष तक
d) बाल्यकाल - 2 से 11 या 12 वर्ष तक
• पूर्व बाल्यकाल - 6 वर्ष तक
• उत्तर बाल्यकाल - 7 से 12 वर्ष तक
e) किशोरावस्था - 11 से 13 से लेकर 20-21 वर्ष तक की अवधि।
• प्राक्किशोरावस्था - लड़कियों में 11-13 वर्ष तक। लड़कों में एक वर्ष पश्चात्
• पूर्वकिशोरावस्था - 16-17 वर्ष तक
• उत्तर किशोरावस्था - 20-21 वर्ष तक

> विकास की विभिन्न अवस्थाओं का वर्णन निम्नलिखित प्रकार से किया जा सकता है -
1) जन्म से पहले की अवस्था
2) शैशवावस्था
3) पूर्व बाल्यावस्था
4) उत्तर बाल्यावस्था
5) किशोर अवस्था
6) प्रौढ़ा अवस्था

1) **जन्म से पूर्व की अवस्था :-**

विकास की वह अवस्था गर्भधारणा से लेकर बालक के जन्म लेने तक की अवस्था है। माता के रजकण डिम्ब तथा पिता के शुक्राणु की जैसे ही निषेचन क्रिया होती है वैसे ही भ्रूण का विकास प्रारंभ हो जाता है। इस अवस्था में भ्रूण नौ महीने तक तेज गति से माता के गर्भ में विकसित

Scanned with CamScanner

होता रहता है। इस अवस्था के सूक्ष्म निषेचित कोष को नंगी आँखों से नहीं देखा जा सकता।

i) डिम्ब - अवस्था → इस अवस्था को 'बीजावस्था' भी कहते हैं। डिम्ब अवस्था की अवधि गर्भधारण से लेकर दो सप्ताह तक होती है।

ii) भ्रूण - अवस्था → यह अवस्था दो से लेकर आठ महिने तक होती है। इस अवस्था में जीव भ्रूण कहलाता है। इस अवधि में भ्रूण में अनेक प्रकार के बाह्य तथा आंतरिक अंगों का विकास होता है। 3 महिने के अंत तक भ्रूण की आकृति मानव का रूप धारण कर लेती है।

iii) गर्भस्थ - शिशु अवस्था → यह अवस्था 8 सप्ताह से लेकर जन्म काल तक होती है। जीव की सभी ज्ञानेन्द्रियों का विकास इस अवस्था में शुरू हो जाता है।

2) शैशव अवस्था :-

इस अवस्था को जीवन की आदर्श काल की अवस्था कहा जाता है। यह अवस्था जन्म से लेकर दो वर्ष तक चलती है। इस अवस्था में शिशु बाहरी वातावरण के साथ समायोजन स्थापित कर लेता है। इसमें विकास की प्रक्रिया बहुत तेजी से होती है। बालकों में संवेदी तथा मांसपेशीय कौशलों का विकास हो जाता है। बालक अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दूसरों पर आश्रित रहता है।

3) पूर्व-बालयअवस्था :-

विकास की यह अवस्था 2 वर्ष से 6-7 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में बालक का विकास ज्यादा तीव्र गति से नहीं होता। इसमें बालक बोलने तथा क्रियात्मक कार्य करना शुरू कर देता है। जैसे - गेंद फेंकना, ठोकर मार कर चलना आदि क्रियाएँ सीख जाता है। इस अवस्था में बालक बड़ों की भाषा का प्रयोग करना सीख जाते हैं। इस अवस्था में बालक प्रश्न करना और उत्तर देना सीख जाते हैं।

4) उत्तर - बालयअवस्था :-

यह अवस्था 6-7 वर्ष से लेकर 10-11 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में बालक आत्मविश्वास, सामाजिकता, विद्यालय जाना प्रारंभ, साथियों के साथ रहकर वास्तविकताओं से परिचित होने लगता है। इन्हीं के साथ-2 विभिन्न कौशलों का विकास भी होता है

Scanned with CamScanner

इस अवस्था में बालक सुझाव, ग्रहणशीलता, पढ़ना, लिखना तथा प्रतियोगिता भावना को सीख लेता है।

5) किशोरावस्था :-

इस अवस्था को जीवन की तूफान अवस्था भी कहते हैं। इस अवस्था में बालक परिपक्वता की ओर बढ़ता है। यह अवस्था 11-12 वर्ष से लेकर 21 वर्ष तक होती है। बालकों में विकास बहुत तीव्र गति से होता है। लड़कों की आवाज भारी हो जाती है। इस अवस्था में किशोर एवं किशोरियों में विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण बढ़ जाता है। इस अवस्था में मन में काफी तनाव तथा संवेदनशीलता बढ़ जाती है। इस अवस्था में माता-पिता सही मार्ग दर्शन का काम करते हैं। यह अवस्था किशोरों की नाजुक अवस्था होती है। इसमें तर्कशक्ति तथा चिंतन शक्ति का विकास होता है।

6) प्रौढ़ावस्था :-

यह अवस्था 21 वर्ष से 40 वर्ष तक होती है। इस अवस्था तक पहुँचते-2 व्यक्ति पूर्ण परिपक्वता को प्राप्त कर लेता है। परिपक्वता को प्राप्त करने के बाद व्यक्तियों में विभिन्नताएँ पाई जाती हैं। इस अवस्था में व्यक्ति पर भिन्न प्रकार की जिम्मेदारीयाँ, कर्तव्य तथा उपलब्धियों का भार बढ़ने लग जाता है। इसमें माता-पिता व परिवार के अन्य सदस्यों से सम्पूर्ण स्नेह व प्रेम मिलता है। इस अवस्था में व्यक्ति अपना कार्य कर्तव्य का निर्वाह अच्छी प्रकार से कर पाता है। यह अवस्था जीवन भर चलती है। इस अवस्था में व्यक्ति नैतिक मूल्यों के आधार पर समाज के साथ अच्छे सम्बन्ध को समझने लगता है।

Scanned with CamScanner

Imp. पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सम्प्रत्यय :-

पियाजे जिनेवा विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। उन्होंने अपने ही 3 बच्चों पर अध्ययन किया। अपने बच्चों के विस्तृत अध्ययन से बदलते हुए स्वरूप की प्रवृत्ति के बारे में निष्कर्ष निकाले। जैसे बच्चों की प्रत्यक्षीकरण और विचारों का पता चलता है वैसे ही बच्चा शैशवावस्था, किशोरावस्था तक पहुँच जाता है।

संज्ञान का अर्थ :-
संज्ञान वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीव को किसी वस्तु द्वारा घटना या परिस्थितियों का बोध हो। इसके अंतर्गत प्रतिकरण, तर्क, निर्णय, चिंतन समस्या का समाधान आदि ज्ञानात्मक क्रिया भी कहा जाता है तथा बुद्धि के विकास नाम से भी जाना जाता है। स्मृति, तर्क शक्ति, सोचने की शक्ति।

इसकी चार अवस्थाएँ होती हैं :-
1) संवेदी पेशीय या गतिवाही अवस्था
2) पूर्व - प्रक्रिया अवस्था या प्री- ऑपरेशन अवस्था
3) स्थूल - संक्रिया की अवस्था या कॉन्क्रीट ऑपरेशन अवस्था
4) औपचारिक प्रक्रिया अवस्था या फॉरमल ऑपरेशन अवस्था

1) संवेदी पेशीय या गतिवाही अवस्था :-
यह संज्ञानात्मक विकास की प्रथम अवस्था है जन्म से लेकर 2 वर्ष तक होती है। जन्म के समय बच्चे केवल सहज क्रियाएँ करते हैं। जिसमें बच्चा इन्द्रियों के जरिए वस्तुओं ध्वनियों आदि का अनुभव प्राप्त कर लेते हैं। बाहरी वातावरण और उसकी इन्द्रियों के मध्य पारस्परिक आहान प्रदान होने से इस चरण में मानसिक क्रियाएँ होती हैं।

भाषा के बिना वह अपने अनुभवों को इन्द्रियों द्वारा व्यक्त करता है जैसे - वस्तु को टकटकी लगाकर देखना, भूख लगने पर रोना।

पियाजे ने 6 उपअवस्थाएँ बताई हैं :-

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

a) सहज क्रियाओं की अवस्था :-

इसकी अवधि जन्म से 30 दिन तक की होती है। इस अवस्था में बालक केवल सहज क्रिया ही करता है। जैसे - किसी वस्तु को मुँह में चूसने की क्रिया। यह क्रिया सबसे अधिक प्रबल होती है।
2 वर्ष की अवधि समाप्त होने पर बच्चों में विचार और कल्पना प्रारम्भ हो जाती है।

b) प्रमुख वृतीय अनुक्रियाओं की अवस्था :-

यह अवस्था 1 माह से 4 माह तक होती है बच्चे की सहज क्रियाएँ कुछ सीमा तक उनकी अनुभूतियों द्वारा परिवर्तित होती है। इस अवस्था के बच्चे अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति बिना डर के करते हैं।

c) गौण अनुक्रियाओं की अवस्था :-

इस अवस्था की अवधि 4-6 मास तक की होती है। इस अवस्था में बच्चे वस्तुओं को स्पर्श करने तथा इधर उधर करने की अनुक्रिया ही करते हैं।

d) तृतीय अनुक्रियाओं की अवस्था :- गौण स्कीमेटा की अवस्था :-

यह अवस्था 8-12 मास तक होती है। इसके अन्तर्गत बच्चे उद्देश्य को प्राप्त करने के साधनों में अन्तर करने लग जाते हैं। अपने बड़ों की क्रियाओं का अनुकरण भी करने लग जाते हैं।

e) तृतीय अनुक्रियाओं की अवस्था :-

12-18 मास तक होती है। इसमें बच्चा वस्तुओं के गुणों को भूल व प्रयास द्वारा सीख सकता है।

f) मानसिक सहयोग की अवस्था :-

18 से 24 मास तक होती है इस अवस्था के दौरान बच्चे देखी गयी वस्तु की अनुपस्थिति में भी अस्तित्व को समझना शुरू कर देते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

2. <u>पूर्व प्रक्रिया (या प्री आप्रेशन) की अवस्था</u> :-

प्याजे ने 2 से 7 वर्ष की अवस्था को पूर्व सक्रियात्मक अवस्था कहा गया है। इस अवस्था में बालक स्वकेन्द्रित न होकर दूसरों के सम्पर्क से ज्ञान अर्जित करता है। बच्चे की पहचान क्षमता में परिवर्तन आने लगता है शब्द ज्ञान में वृद्धि तथा स्वयं भी शब्दों का प्रयोग करने लगता है।

इसकी 2 अवस्थाएँ बताई गई हैं।

A) पूर्व सम्प्रत्यात्मक अवधि
B) अन्त: दर्शीय अवधि

A) <u>पूर्व सम्प्रत्यात्मक अवधि</u> :- (2-4 वर्ष तक)

इसमें बच्चा अनुकरण एवं खेल द्वारा सीखता है। इस अवस्था में बच्चा सभी निर्जिव वस्तुओं को सजीव मानता है अपने विचारों को सही मानता है।

B) <u>अन्त: दर्शीय अवस्था</u> :- (4-7 वर्ष तक)

इस अवस्था में बच्चा भाषा सीखता है और चिन्तन व तर्क करने लग जाता है। बच्चा मूर्त मूर्त प्रत्यय के साथ-2 अमूर्त प्रत्यय को समझने लग जाता है। इस अवस्था में बच्चा स्वकेन्द्रित व स्वार्थी नहीं होता है। वह दूसरों के सम्पर्क में रहकर ज्ञान प्राप्त करता है। बच्चा ~~साथ~~ रहकर अधिक सीखता है।

3. <u>स्थूल या मूर्त सक्रियात्मक की अवस्था</u> :-

यह अवस्था 7-11 वर्ष तक होती है। इस अवस्था में बच्चे अधिक व्यवहारिक व यथार्थवादी होते हैं। बच्चे में तर्क व समस्या समाधान की क्षमता का विकास होने लगता है। वे सत्य को समझने लग जाते हैं। दो घटनाओं या वस्तुओं के बीच समानता या विभिन्नता करना सीख जाते हैं।

1) कन्जर्वेशन
2) संख्या बोध
3) क्रमानुसार व्यवस्था
4) वर्गीकरण
5) पारस्परिक सम्बन्ध

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

4 **औपचारिक प्रक्रिया की अवस्था :-**

यह अवस्था 12-18 वर्ष की होती है। यह अवस्था 12 वर्ष के बाद प्रारंभ होती है और वयस्क होने तक चलती है। 12 वर्ष तक पहुँचते -2 बच्चों का मस्तिष्क परिपक्व होने लगता है। उनके चिंतन में क्रमबद्ध आने लगती है। आयु के बढ़ने के साथ -2 बच्चों में अनुभव भी बढ़ता है। जिस से समस्या का समाधान आसानी से कर लेता है। इस अवस्था में किशोरों के लिए विचार संगठित एवं परिपक्व हो जाते हैं और इसमें तार्किक चिंतन की क्षमता अर्जित होने लगती है। बच्चा घटनाओं के बारे में नई -2 परिकल्पनाएँ निर्मित करता है। इन्हें सत्यापित करने का प्रयास करता है।

> **इस सिद्धांत के कुछ पद या क्रिया :-**

1) **अनुकूल :-**

वातावरण के अनुसार अपने आप को ढालना अनुकूल कहलाता है। यह जन्मजात की प्रक्रिया होती है। अनुकूलन दो प्रकार की होती है।

i) आत्मसातकरण
पूर्व ज्ञान को नए ज्ञान से जोड़ना

ii) समायोजन (समंजन)
पूर्व ज्ञान या योजनाओं में परिवर्तन करके वातावरण के साथ तालमेल बैठाना।

2) **संरक्षण :-**

पर्यावरण में परिवर्तन तथा स्थिरता दोनों को पहचानने और समझने की क्षमता या किसी वस्तु के स्वरूप में परिवर्तन, उस वस्तु के तत्त्व में परिवर्तन से अलग करने की क्षमता का होना।

3) **संज्ञानात्मक संरचना :-**

बालक का मानसिक संगठन अर्थात् बुद्धि में विभिन्न क्रियाएँ होती हैं जैसे प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, चिंतन तथा तर्क ये सभी संगठित होकर कार्य करती हैं और वातावरण के

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

साथ समायोजन कर लेते हैं।

4) मानसिक संक्रिया :-

इस क्रिया से अभिप्राय है कि बालकों द्वारा समस्या के समाधान के लिए किया जाने वाला चिंतन।

5) स्कीमस :-

किसी काम को करने के लिए विभिन्न प्रकार के तथ्य या प्रत्यय तरीके को स्कीमस कहते हैं।

6) स्कीमा :-

किसी वस्तु का व्यवहार करने का खुद का ढंग या तरीका। एक ऐसी मानसिक संरचना जिसका सामन्यीकरण किया जा सकता है।

7) विकेन्द्रिक :-

एक ही समस्या को अलग - 2 रूप से समझ पाने की योग्यता या समस्या को अलग तरीके से सीखना।

> विशेषताएँ :-

1) पियाजे के अनुसार सीखना एक क्रमिक प्रक्रिया है।
2) बालकों में चिंतन एवं खोज करने की शक्ति उनकी जैविक परिपक्वता अनुभवों तथा इन दोनों की अन्त: क्रिया द्वारा निर्धारित होती है।
3) बच्चों के अमूर्त चिंतन पर शिक्षा का प्रभाव होता है। शिक्षा का स्तर निम्न है तो अमूर्त चिंतन होता है। उच्च स्तर की शिक्षा है तो चिंतन भी उच्च स्तर का होता है।
4) औपचारिक संक्रिया अवस्था में बालकों की बौद्धिक शक्ति का सम्पूर्ण शक्ति का विकास हो जाता है। वह समस्या का समाधान कर्मबद्ध एवं ढंग से करने में सक्षम हो जाता है।
5) सीखने के लिए पर्यावरण और क्रिया की आवश्यकता होती है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

Q.1(4M) > व्यक्तिगत / वैयक्तिगत विभिन्नताएँ :- (कालटन) मनोवैज्ञानिक

Introduction :- प्रत्येक प्राणी अपने जन्म से ही विशेषताओं को लेकर पैदा होता है। जो विशेषताएँ उसको माता - पिता के पूर्वजों से मिलती हैं। इसी के साथ पर्यावरण में भी छात्र एक - दूसरे से भिन्न होते हैं। एक कक्षा या एक समूह के विद्यार्थियों में विभिन्न प्रकार की भिन्नताएँ हैं।

Meaning :- जब दो बालक विभिन्नता समानताएँ रखते हुए भी आपस में भी विभिन्न व्यवहार करते हैं। तो इसे व्यक्तिगत विभिन्नताएँ कहा जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में जैविक, मानसिक, सांस्कृतिक अंतर पाया जाता है। इसी अंतर के कारण एक व्यक्ति से दूसरे से भिन्न माना जाता है। अतः कोई भी दो व्यक्ति समान नहीं होते। यहाँ तक जुड़वा बच्चों में भी असमानता पाई जाती है।

Definition :- 1) जेम्स के अनुसार व्यक्तिगत भिन्नता के अनुसार / अंतर्गत कोई व्यक्ति अपने समूह के शारीरिक तथा मानसिक गुणों के औसत से जितनी भिन्नता रहती है उसे व्यक्तिगत विभिन्नता कहते हैं।

2) स्किनर के अनुसार व्यक्तिगत भिन्नताओं में सम्पूर्ण व्यक्तित्व का कोई भी ऐसा पहलू सम्मलित हो सकता है, जिसका माप किया जा सकता है।

3) टाइलर के अनुसार शरीर के आकार की स्वरूप शारीरिक शक्ति सम्बंधी क्षमताओं, बुद्धि, उपलब्धि ज्ञान रुचियों अभिवृत्तियों और व्यक्तित्व के लक्षणों की माप की जाने वाली विभिन्नताओं को व्यक्तिगत विभिन्नताओं कहते हैं।

> वैयक्तिक विभिन्नता की प्रकृति :-

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

1) विचलनशीलता तथा प्रधानता :-
व्यक्ति के किसी गुण अथवा लक्षण की दृष्टि से किसी समूह के व्यक्ति एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। अर्थात् लक्षण एवं योग्यता का विकास सभी में समान नहीं होता है।

2) अभिवृत्ति तथा अधिगम की भिन्न गति :-
अभिवृत्ति तथा विकास सभी व्यक्तियों में न तो एक साथ प्रारंभ होता है और न ही एक गति होती है। कुछ व्यक्तियों में विकास की गति बहुत तेजी से होती है। वह अन्य की अपेक्षा शीघ्र ही सक्षमता प्राप्त कर लेता है। लेकिन वातावरण तथा जैविक कारण से कुछ व्यक्तियों में विकास की गति धीमी होती है।

3) लक्षणों का अंतर संबंध :-
व्यक्ति के लक्षणों का परस्पर घनिष्ठ संबंध है। वे एक-दुसरे की भाँति सम्मान तथा संयुक्त होते हैं। जैसे बालक की कक्षा के धारणा की भाँति उसे हीन समझते हैं। जैसे अभिरुचि, रूचि, क्रियाकलाप आदि।

4) वंशानुक्रमीय तथा वातावरणीय कारकों का प्रभाव :-
व्यक्तियों के कुछ गुण वंशानुक्रम तथा वातावरण के प्रभाव से होता है। जैसे स्वास्थ्य, शारीरिक गठन, अनुभव, पारिवारिक संबंध, विद्यालय की प्रकृति तथा बालक को मिलने वाली शिक्षा पूरी तौर से व्यक्ति में लक्षणों को प्रभावित करती है।

Q2) > वैयक्तिक विभिन्नताओं के क्षेत्र या स्वरूप :-
1) शारीरिक विभिन्नता
2) मानसिक विभिन्नता
3) भावनात्मक विभिन्नता
4) रूचि एवं दृष्टिकोण में विभिन्नता
5) अधिगम प्रक्रिया में विभिन्नता
6) विशिष्ट योग्यताओं में विभिन्नता

Scanned by CamScanner
Scanned with CamScanner

7) चारित्रिक विभिन्नता
8) सांस्कृतिक और भौगोलिक विभिन्नता
9) ज्ञानात्मक योग्यताओं में भिन्नता
10) व्यक्ति में विभिन्नता
11) अभिप्रेरणाओं में भेद
12) समायोजन में भेद
13) लैंगिक विभिन्नता
14) एक ही व्यक्ति में वैयक्तिक विभिन्नताएँ
15) सीखने में विभिन्नताएँ
16) उपलब्धियों में विभिन्नताएँ
17) अभिरुचियों में विभिन्नताएँ
18) चरित्र तथा व्यक्तित्व की विभिन्नताएँ
19) स्वभाव तथा मनोवृत्तियों में भिन्नता

> वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रकार :-
1) अंतर वैयक्तिक विभिन्नताएँ
2) अन्तः वैयक्तिक विभिन्नताएँ

> वैयक्तिक भेदों या भिन्नता के कारण :-
1) आयु एवं बुद्धि का प्रभाव
2) शिक्षा एवं आर्थिक दशा का प्रभाव
3) लिंग या यौनगत भेद का प्रभाव
4) जाति, प्रजाति एवं देश का प्रभाव
5) वातावरण
वातावरण से संबंधित निम्नलिखित कारक वैयक्तिक भिन्नताओं को उत्पन्न करते हैं -
1) पारिवारिक वातावरण
2) निर्धनता
3) पक्षपात पूर्ण वातावरण
4) अत्यधिक सुरक्षा
5) विद्यालय का वातावरण

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

6) वंशानुक्रम का प्रभाव
7) अन्य कारण

> व्यक्तिगत भिन्नताओं के शैक्षिक शैक्षणिक महत्त्व :-

1) योग्यताओं में भिन्नता :-
प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने की योगिताओं में भिन्नता पाई जाती हैं। ये योगिताएँ शारीरिक और मानसिक होती हैं। कई बालक शारीरिक रूप से इतने अयोग होते हैं कि वे कक्षा की शिक्षा को ग्रहण कर पाने में कठिनाई होती हैं जैसे आँख कमजोर होना, कम सुनाई देना आदि। कई बालक मानसिक रूप से अयोग हैं। वे साधारण बुद्धि वाले बालक जितना कार्य भी नहीं कर पाते।

2) अभिवृत्तों में भिन्नता :-
बालकों की अभिवृत्तियों में भिन्नताएँ पाई जाती हैं। यह उपलब्धि उसकी रुचि, अभिवृत्ति, योगिताओं तथा वातावरण से बहुत प्रभावित होता है। ये भिन्नता लिंग, आयु, वातावरण रुचि आयु को प्रभावित करती हैं। जैसे लड़के - गणित व तकनीकी क्षेत्र व लड़कियाँ गृह - विज्ञान में तथा साहित्य अभिवृद्धि होती हैं।

3) उपलब्धियों में भिन्नता :-
प्रत्येक बालक की उपलब्धि दूसरे बालक से भिन्न होती हैं। एक ही कक्षा में एक ही परिवार के अलग - 2 बच्चों उपलब्धियाँ अलग - 2 हो सकती हैं। जैसे कुछ बच्चों के गणित में उपलब्धि अधिक होती हैं। परन्तु इतिहास व अंग्रेजी में कमजोर हो सकते हैं।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

APCO
Date
Page 40.

4) व्यक्तिगत भेदों के कारण बच्चों का वर्गीकरण :-

1) मानसिक योग्यताओं के आधार पर
2) रुचियों के आधार पर
3) लिंग भेद के आधार पर
4) सामाजिक - आर्थिक स्तर के आधार पर
5) शारीरिक दोषों के आधार पर

Q3) > व्यक्तिगत भेदों पर अध्यापक के कार्य पर प्रभाव :-

1. वर्गीकरण :-
अध्यापक कक्षा के विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं, रुचियों और क्षमता के आधार पर वर्गीत कर सकता है।

2. व्यक्ति ध्यान :-
अध्यापक को एक ही कक्षा में सभी विद्यार्थियों पर ध्यान देना है। व्यक्तिगत ध्यान से ही प्रभावशाली पिछड़े विद्यार्थी की विभिन्नताओं को ध्यान देते हुए सहायक करते हैं।

3. पाठ्यक्रम :-
कुछ विद्यार्थी की रुचि विज्ञान में है। कुछ की गणित तो दूसरों की वाणिज्य में। इस प्रकार की समस्या में यह आवश्यक है। कि विद्यार्थियों के लिए विषय होने चाहिए।

4. पढ़ने की विधियाँ :-
सभी विधियाँ सब विद्यार्थियों के अनुकूल नहीं होती। अध्यापक को विधि का चुनाव व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए करें। जिससे विद्यार्थियों को लाभ हो सके।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

5. समायोजन संबंधी समस्याएँ :-

इन विभिन्नताओं के कारण विद्यार्थी कक्षा में अपने आप को समायोजित नहीं कर पाते। किसी को पाठ्यक्रम कठिन लगता है। किसी को समय सारणी अनुकूल नहीं होता तथा दूसरो के साथ मिलजुल कर नहीं रहते। एक अध्यापक को चाहिए की भिन्न समस्या को समझकर उनके समायोजन के लिए उचित शैक्षिक वातावरण उत्पन्न करें।

> नियमित कक्षा कक्ष में बाल केन्द्रित शिक्षा :-

अध्यापक को अपने विद्यार्थियों की सम्भावना और समस्या सीमाओं को ध्यान में रखते हुए पाठ्य योजना तैयार करनी चाहिए।

> शिक्षा का कार्य सभी को समान स्तर पर लाना नहीं है :-
अध्यापक का उद्देश्य सबको एक स्तर पर लाने का होना चाहिए। बल्कि उसका उद्देश्य है ही कि वह हर विद्यार्थी को जाने और उसी के अनुसार से शिक्षा प्रदान करें।

> निर्देशक प्रदान करना :-

सभी विद्यार्थी समान होते तो निर्देशक की आवश्यकता ही नहीं होती। न कि पाठ्य क्रम की कोई समस्या आती। इसलिए विद्यार्थियों की विभिन्नता को भिन्न मनोवैज्ञानिक के परिक्षण के माध्यम से उनकी रुचियाँ, अभिवृत्ति योगिताएँ एवं उपलब्धि के अनुसार शैक्षिक और व्यवसायिक निर्देशक प्रदान करें।

> वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रकार :-
1) अभिरुचियों में विभिन्नता
2) शामक योग्यताओं में विभिन्नताएँ
3) लैंगिक विभिन्नता

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

4) एक ही व्यक्ति में वैयक्तिक विभिन्नताएँ
5) उपलब्धियाँ में विभिन्नताएँ
6) रूचियों में भिन्नता
7) चरित्र में विभिन्नताएँ
8) संवेगात्मक विभिन्नताएँ
9) शारीरिक विभिन्नताएँ
10) मानसिक विभिन्नताएँ
11) सीखने में विभिन्नताएँ

> वैयक्तिक विभिन्नताओं को मापने की विधियाँ :-

1) निरीक्षण या अवलोकन विधि :- (वही दर्शन विधि)
दो प्रकार की होती है - नियंत्रण और अनियंत्रण (इसमें व्यक्ति के विशेष गुण को जाना जाता है। व्यक्ति के व्यवहारों के भिन्न-2 परिस्थितियों का अध्ययन करना यह विधि सार्वभौमिक होती है। और इसके प्रवर्तक वॉरसन है। दोनों ही प्रकार के अवलोकन से ही किसी व्यक्ति विशेष के व्यवहार का गुणों को जान सकते है।

2) प्रश्नावली विधि :-
प्रश्नावली विधि के सबसे प्राचीन प्रवतन से सुकरत (यूनान) और शिक्षा के क्षेत्र में इस विधि का प्रयोग गुडवर्थ ने किया था। ये चार प्रकार की होती है।
1) प्रतिबंधित / बंद (सीमित :-(हाँ या ना)
2) खुली प्रश्नावली :-(विस्तार मुक्त)
3) चित्रित प्रश्नावली :- (चित्र के माध्यम से)
4) मिश्रित प्रश्नावली :- (तीनों का मिला-जुला हो)

3) साक्षात्कार :-
इस विधि को सबसे पहले अमेरिका में शुरू

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

किया गया था। जब दो व्यक्ति के बीच आमने - सामने बातचीत होती है। उसे साक्षात्कार कहते हैं। ये तीन प्रकार के होते हैं:-

1) निर्देशित :- (पहले से निश्चित प्रश्न)
2) अनिर्देशित :- (प्रश्न की कोई सीमा नहीं होती)
3) समाहार :- (इन दोनों से मिले होते हैं।)

4) प्रक्षेपी प्रविधियाँ :-
प्रक्षेपी शब्द का प्रयोग सिगमन फ्राइड और इस विधि को प्रमावृत्ति विधि। अपनी बातों, विचारों, भावनाओं आदि को स्वयं न बताकर किसी अन्य माध्यम से व्यक्त करता है।
अचेतन मन - दबी हुई इच्छाओं को बाहर निकालना प्रक्षेपी विधि में टी.ए.टी टैस्ट होता है।

T.A.T (The mare Apperction test)
(प्रासंगिक अंतर्बोध / कथा प्रसंग परीक्षण)
(मार्गन मुरे (1935) में दिया था)

C.A.T (children Apperction test)
(बाल प्रसंग परीक्षण)
(ल्यीपोल्ड बैलॉक 1948)
इसके बाद (डा० अरनेकस क्रिस 1951)

I.B.T (Ink Block test)
(स्याही धब्बा परीक्षण)
(हरमन रोसा)

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner

S.C.T (Sencentence Complete test)
(वाक्य पूर्ति परीक्षण)
(पाईन व टैण्डलर 1930)

F.W.A.T (Fruidom would Apprection test)
(स्वतंत्र शब्द सहचारि परीक्षण)
(गालटन)

5) मनोवैज्ञानिक परीक्षण :-
व्यक्तिगत विभिन्नता को जानने के लिए तीन प्रकार के परीक्षण उपलब्ध हैं। जैसे रूचि, अभिरूचि और बुद्धि परीक्षण। मनोवैज्ञानिक परीक्षण 2 प्रकार के होते हैं - व्यक्तिगत एवं सामूहिक। जब परीक्षण एक समय में एक ही व्यक्ति का किया जाता है। तो व्यक्तिगत परीक्षण होता है। सामूहिक परीक्षण जब एक समय में एक परीक्षण को एक से अधिक व्यक्ति में किया जाता है उसे सामूहिक परीक्षण कहते हैं।

6) माता - पिता की रिपोर्ट :-
कई बार विद्यार्थियों के कुछ गुण या अवगुण का माता - पिता से पता चलता है। जिस योग्यता का अध्यापक अनुमान नहीं लगा पाता।

7) मापदंड मूल्यांकन :-
यह मूल्यांकन कई प्रकार से होता है। जैसे तीन बिंदु पर आधारित, पाँच बिंदु पर आधारित और सात-बिंदु पर आधारित होता है।

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner